BLM Academy
Padampur Devaliya, Gora Parao, Haldwani (NTL)
Ph. No. 05946 - 210831, Mob.: 7520068217

धर्म – निरपेक्ष शिक्षा व्यवस्था : ' एक प्रश्न '

July 2009

सुबह – सुबह समाचार पत्र उठाइये और एक के बाद एक, पन्नों पर नजर डालिए तो आप रूबरू होते हैं कि देश – विदेश में क्या हो रहा है। एक समय था, उत्सुकता होती थी समाचार पत्र पढ़ने की, कि कब समाचार पत्र आये। उत्सुकता आज भी है किन्तु एक डर के साथ कि पता नहीं क्या पढ़ने को मिले। समाचार पत्र देश – विदेश के घृणित अपराधों का आइना बन गया है। समाचार पत्र पढ़कर दिल सिहर उठता है कि कितने असुरक्षित वातावरण में जी रहे हैं हम। हर वक्त किसी न किसी प्रकार का खौफ। आज इस लज्जाहीन समाज में बेटियाँ और बहुएँ कितनी असुरक्षित हैं।

पर दोष दें तो किसे दें ? स्थिति बिगड़ते – 2 यहाँ तक पहुँच गयी कि चाहे समचार सुनें या पढ़ें – 75 प्रतिशत समाचार जीवन के प्रति हताशा पैदा करते हैं। शिक्षा – विभाग से जुड़े होने के कारण मेरे लिए यह एक चिन्ता का विषय है। सबसे बड़ी समस्या आती है जब बच्चों को प्रार्थना – सभा के लिए समाचार लिखने होते हैं। वे क्या लिखें ? हर रोज की तरह वही भ्रष्टाचार, आतंकवाद, नैतिक चरित्र का पतन, धोखा – धड़ी, धरने हड़ताल, मारपीट, बलात्कार आदि की खबरें।

गम्भीरता से सोचा कि भावी पीढ़ी को विरासत में क्या यही सौगात मिलेगी ? क्या हम भय, चिन्ता व असुरक्षा से घिरा समाज अपने बच्चों के लिये छोड़कर जायेंगे ? आर्थिक रूप से निःसन्देह देश प्रगति कर रहा है जो एक शुभ संकेत है किन्तु चारित्रिक पतन के कारण असुरक्षा एक चिन्ता का विषय है। आखिर चारित्रिक पतन का कारण क्या है ? भातर जैसे धर्म प्रधान लोकतांत्रिक देश में, अतीत में क्या कभी किसी ने कल्पना की होगी कि आने वाले समय में भाई – भाई का लहू पी लेगा, बेटा बाप का कातिल होगा या बाप बेटी की अस्मिता लूट लेगा और हैवानियत अपनी हदें लाँघ देगी।

कब यह सब रूकेगा ? कब जागेंगे हम ? कब हमें होश आयेगा? ऐसा न हो कि बहुत देर हो जाय। अतः आवश्यकता है विचार करने की कहाँ से नैतिक चरित्र को सुदृढ़ करने की पहल करें। यह जिम्मेदारी आखिर किसकी है ? या तो माता – पिता की या विद्यालय की। आधुनिकता के नाम पर, या माता – पिता के कामकाजी होने या समयाभाव के कारण धर्म एवं अनिवार्य आवश्यक संस्कारों की शिक्षा परिवारों से विलुप्त – प्राय सी हो गयी है। एकल परिवार व्यवस्था में दादी, बुआ, नानियों की कहानी सुनाना अब एक सपना सा हो गया है। कम्प्यूटर और इन्टरनेट के समय में परिवारों में नीति, संस्कार और आचरण की शिक्षा कल्पना से परे है। धर्म निरपेक्ष देश के नाम पर विद्यालयों में धर्म की शिक्षा पर प्रतिबंध है तो चरित्र बनेगा कहाँ से ? विद्यालयों में नैतिक – शिक्षा एक विषय जरूर है किन्तु एक औपचारिकता मात्र का निर्वहन कर देने से विद्यालय अपने कर्तव्यों की इतिश्री समझ लेते हैं।

BLM Academy
Padampur Devaliya, Gora Parao, Haldwani (NTL)
Ph. No. 05946 - 210831, Mob.: 7520068217

दिल्ली के एक प्रतिष्ठित विद्यालय के छात्रों से जब प्रार्थना सभा के कार्यक्रमों के बारे में पूछा तो पता चला कि वहाँ किसी तरह की प्रार्थना नहीं होती, केवल प्रतिज्ञा, राष्ट्रीय – गान व अन्य कार्यक्रम जैसे आज का विचार, सामान्य ज्ञान प्रश्नावली समसामयिक खबरें आदि – आदि ही होते हैं। जब विद्यालयों में ईश्वर का नाम लिया ही नहीं जाय तो कैसे चरित्र की अपेक्षा की जाए ? यह समझ में नहीं आता कि धर्म की शिक्षा में हानि क्या है ?

यह सब रोकने के लिए सबसे पहले शुरूआत अपने घर से ही करनी होगी। घरों में धार्मिक वातावरण के साथ–साथ आचरण की सात्विकता आवश्यक है। पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण आने वाले समाज के नैतिक चरित्र के लिए घातक होगा इसमें दो राय नहीं। आवश्यकता यह भी है कि विद्यालयों में हर धर्म की सही शिक्षा दी जाए, ताकि कोई भी धर्म के नाम पर गुमराह न हों, हर व्यक्ति हर धर्म को व उसकी बहुमूल्य शिक्षाओं व नीतियों को जाने, ताकि वह हर धर्म की अच्छाइयों को अपने जीवन में उतारन की कोशिश करें व दूसरे धर्म के अनुयायियों के प्रति घृणा व वैमनस्य का भाव न रखे।

विद्यालयों में यदि हर धर्म की शिक्षा दी जाये तो विद्यार्थी विभिन्न धर्मों की बहुमूल्य धरोहरों को जानकर उनका सम्मान करेंगे और आपस में सौहार्द्र बढ़ेगा। धर्म के नाम पर गुमनाह हो रहे युवा वर्गों में चाहे वह हिन्दू समाज हो या मुस्लिम या इसाई विभिन्न समाजों में सद्भाव बढ़ेगा। यदि सामाजिक सर्वेक्षणों पर ध्यान दें तो पता चलता है कि वास्तव में हम धर्मों के बारे में जानते ही नहीं, इसीलिए धर्मों के नाम पर लकीरें खिंचती हैं और तलवारें तनती हैं। धर्म के नाम पर कट्टरता तो विद्वानों में प्रायः देखी ही नहीं जाती क्योंकि वे 'धर्म के मर्म' को समझते हैं। जबकि विभिन्न धर्मों के कुछ विवेकहीन कट्टरपन्थी अपने – 2 धर्म की रक्षा करने की जो कोशिश कर रहे हैं, उससे लाभ कम, हानि अधिक हो रही है।

अतः विद्यालयों में विभिन्न धर्मों की शिक्षा की परम आवश्यकता है ताकि विद्यार्थियों का जो कि देश के भावी नागरिक हैं, चरित्र निर्माण किया जा सके और एक भयहीन व सुरक्षित समाज का निर्माण किया जा सके।

श्रीमती रजनी कान्ता बिष्ट

प्रधानाचार्या
बी॰ एल॰ एम॰ एकेडमी